एक स्वतंत्रता सेनानी जो हमेशा स्वतंत्रता सेनानी रहे!

मनोहर नायक

पिता गणेश प्रसाद नायक, जिन्हें हम भाई-बहन दादा कहते थे, उनकी 103वीं जयंती है। दादा 1985 में चले गये थे। कोई पचीस बरस उन्हें देखते बीते। उस पचीस बरस के दौर को याद करना किसी और समय की याद करना लगता है और उसके भी पहले के तीन दशक, जिनके बारे में उनसे और दूसरों से सुना, वह तो आज दूसरे युग की ही बातें लगतीं हैं। इस दौर में नायक जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कांग्रेसी और फिर समाजवादी नेता के रूप में सक्रिय थे। पुराने मध्यप्रदेश सीपी एंड बरार में उनकी और उनकी मित्रमंडली की तूती बोलती थी।

जबलपुर के एक ग़रीब परिवार में जन्मे नायक जी ने अभावों और मुश्किलों के बीच अपना रास्ता खुद बनाया।1930 में रानी दुर्गावती की समाधि पर जाकर देश के लिये लड़ने का और खादी पहनने का संकल्प लिया। घर वालों का दबाव था कि नौकरी करें, लेकिन उन्हें पढ़ने की ज़िद थी। घर पर स्वयं बोझ न हों इसलिये ट्यूशन करते, पढ़ाई करते और आंदोलन करते। शायद 32-33 में खादी की क़ीमत बेहद बढ़ गयी। गांधीजी को पत्र लिखा, ग़रीब हूँ ,छात्र हूँ ,खादी का संकल्प लिया है ; अब क्या करूँ ? गांधीजी का जवाब आया , "Dear ganeshprasad, where there is a will there is a way. cut short your expenses... bapu."

नायक जी छात्रों के सर्वमान्य नेता थे। उनकी एक आवाज़ पर हड़ताल हो जाती थी। रविशंकर शुक्ल, डीपी मिश्र और गोविंददास का प्रदेश कांग्रेस पर वर्चस्व था।नायकजी के अभिन्न साथी थे भवानी प्रसाद तिवारी , गुलाबचंद गुप्ता , सवाईमल जैन, महेशदत्त मिश्र आदि । त्रिपुरी कांग्रेस में अपनी भूमिकाएँ पाने के लिए इन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। नायक जी उसमें स्वयं सेवकों के प्रधान थे। ये सब तूफ़ानी लोग थे। प्रखर और ओजस्वी। नायकजी और तिवारीजी बेजोड़ वक्ता थे। दादा कभी संस्मरणों की रौ में कहते, मनोहर मेरे और भवानी के बाद कोई भाषण नहीं होता था। प्रसंगवश, कई साल पहले देर रात जबलपुर स्टेशन पर जब ज्ञानरंजन जी ने मेरा परिचय कवि मलय जी से कराया तो उन्होंने कहा अरे आप नायक जी के पुत्र हैं... नायक जी तिवारी जी के भाषण सुन-सुन कर ही तो हम समाजवादी विचारों से संस्कारित हुए हैं।

आज़ादी के आंदोलन के समय उनकी गतिविधियों पर ख़ास निगाह रखी जाती थी। उन्हें ख़तरनाक माना जाता था। यही कारण था कि जब 1944 में उनके पिता का निधन हुआ तब प्रशासन ने कहा कि अंतिम दर्शनों के लिए जेल से उन्हें पैरोल पर ही जाने दिया जायेगा। पैरोल लेना उनके सिध्दांतों के ख़िलाफ़ था तो उन्होंने अंतिम दर्शन के लिए जाने से इंकार कर दिया। इमरजेंसी में जब संघी और जनसंघी नेताओं में पैरोल लेने की होड़ मची रहती थी तब भी नायक जी उन्नीस महीने पैरोल पर नहीं आये। उनकी कीर्ति कुछ ऐसी थी कि जब जेपी के कहने से वे आत्मसमर्पित डकैतों के बचाव के काम में लगे हुए थे तब आईजी से मिलने भोपाल गये । इतवार के दिन घर गये थे। स्लिप भेजी तो गाउन पहने वे दौड़ते आये और उनका हाथ हाथों में लेकर बोले, "come mr nayak come, l knew you since you were a lion then, now you have turned a lamb." उनका इशारा उनके उस काम की तरफ़ था। नायक जी ने उन्हें समझाया कि कैसे वे अब भी मूलगामी परिवर्तन के काम में लगे हुए हैं।

नायक जी के मित्रगण अंततः कांग्रेस में जाकर सांसद-विधायक मंत्री वगैरा हुए। नायक जी अपनी दम पर अपने सरोकारों की लड़ाई लड़ते रहे। उनके मित्र प्रो.महेशदत्त मिश्र ने उनके बारे में कहा था कि हम लोगों के बीच गणेशजी के बारे में ही यह कहा जा सकता है कि, "once a freedom fighter, always a freedom fighter." यह नायक जी की सेवा और संघर्ष का सुफल था कि बिना किसी पद-पदवी के लोग उनका सम्मान करते थे। एक बार परसाई जी ने मुझसे कहा कि नायक जी और तिवारी जी समाज में जिस ईमानदारी और संज़ीदगी से काम करते थे इसकी आज कल्पना करना कठिन है। इमरजेंसी के समय एक दिन परसाई जी ने मुझे रिक्शे में बैठा लिया और कहने लगे कि नायक जी जेल में हैं तो तुम लोग चिंता मत करना। वे ठीक

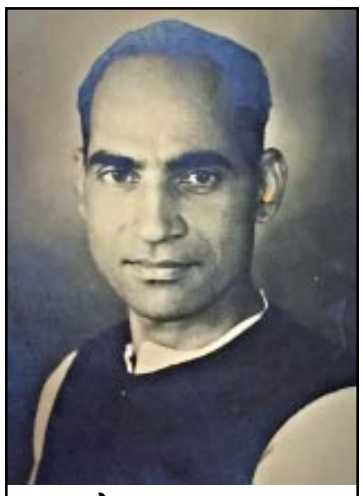

गणेश प्रसाद नायक

होंगे। वे तो जेल जाते रहे हैं। तुम नहीं जानते नायक जी मेरे नेता थे। मैं उनके आगे नायक जी ज़िंदाबाद कहते चलता था। उन्हें स्टेशन छोड़ने और लेने जाता था।

दादा का विवाह मई 1950 में हुआ। विवाह विवाद का कारण बना। माँ गायत्री नायक इलाहाबाद में महादेवी जी की महिला विद्यापीठ में चौदह साल छात्रावास में रहकर पढ़ीं। 1933 से 1947 तक..छठी से एमए तक। वहीं रहते हुए ग्वालियर घराने के एम आर मावलंकर जी से सितार सीखा और उसकी शीर्ष परीक्षा पास की। माँ-दादा का विवाह तिवारी जी के यहाँ से हुआ। बिस्मिल्ला खां की शहनाई बजी। समाजवादियों के साप्ताहिक प्रहरी में बैनर था गणेश गायत्री के विवाह का हाथी झूमता निकला । जीवनलाल वर्मा (विद्रोही) की कविता थी-ये गणेश हैं ये गायत्री। तिवारीजी ने सेहरा लिखा था और उनका एक गीत था ---गनेश से-- मन के रंग उलीचो श्याम।

समाजवादी रहते हुए सेठ गोविंददास के ख़िलाफ़ पहला आमचुनाव लड़े। फिर राजनीति से तिक्त होकर सर्वोदय से जुड़े। कुछ सालों में उससे भी मन भर गया। तभी जेपी का आंदोलन शुरू हुआ। वे मध्यप्रदेश संघर्ष समिति के संयोजक बनाये गये। संघ और जनसंघ के वे शत्रु थे। ग़लत बात पर वे भड़क उठते थे और फिर %सर जाये या रहे, न रहें कहे बग़ैर। फिर उनका कहना बहुत ही शिष्ट भाषा में बेहद तीखा होता था। परसाई जी के अनुसार उनके होठों पर हँसी और नाक पर गुस्सा रहता था। पहली ही बैठक में राजमाता सिंधिया की किसी बात पर बिगड़ कर उन्होंने कहा,पहले आप दिमाग से निकाल दीजिये कि यह किसी रजवाड़े की संघर्ष समिति है। जनसंघ वाले उनके ख़िलाफ़ सक्रिय हो गये। मामा बालेश्वर दयाल, पुरुषोत्तम कौशिक, यमुना प्रसाद शास्त्री, लाड़लीमोहन निगम जैसे समिति के समाजवादी सदस्यों को आगाह करते कि बड़ी मछली तुम्हें खा जायेगी। तिलमिला देने वाले पत्र लिखते। उज्जैन में जेपी आने वाले थे। नायक जी को हटाने की पूरी योजना थी। इंडियन एक्सप्रेस से निकलने वाले आंदोलन के मुखपत्र प्रजानीति में समिति के कामकाज की आलोचना छपी थी। चंद्रशेखर ने अपनी जेल डायरी में रामनाथ गोयनका (आर एन जी) को ख़ूब कोसते हुए जेपी और इंदिरा के बीच मनमुटाव कराने का दोषी उन्हें ही ठहराया था। आर एन जी के ग्रुप पर संघ का ज़ोर था यह सब जानते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा ही हुआ पर उज्जैन में जेपी ने साफ़ कहा कि मैं नायक साहब को 42 से जानता हूँ। मुझे उन पर पूरा भरोसा है। जनसंघियों के हौसले पस्त हो गए। नायक जी ने बहुत मशक्कत कर के जबलपुर संसदीय सीट से शरद यादव को जनता प्रत्याशी बनाया जबकि जनसंघ ये सीट चाहती थी। कुछ महीने बाद तीन विधानसभा उपचुनाव हुए। सर्वसम्मत प्रत्याशी बनाने की कोशिशों को धता बता कर जनसंघ समेत सभी दलों ने अपने उम्मीदवारों को जनता प्रत्याशी घोषित कर दिया। नायक जी ने तीनों जगह जा कर जनता से अपील की कि इनमें से कोई जनता प्रत्याशी नहीं हैं, वह अपने विवेक का इस्तमाल करें। तीनों जगह कांग्रेस जीती। नायक जी ने इमरजेन्सी तक संघर्ष समिति पर जनसंघ को हावी नहीं होने दिया।

वे मुझसे कहते थे कि ये संघ-जनसंघ वाले मुझे बिलइया-दंडवत करते हैं। वे भूल नहीं सकते मैंने गुरु गोलवलकर के साथ क्या किया था। अपने समाजवादी दिनों में, 50 के दशक में, गुरु गोलवलकर जबलपुर आये तब उनकी स्टेशन से शोभायात्रा निकलनी थी। नायक जी इसके सख़्त ख़िलाफ़ थे। विरोध को ले कर पार्टी में मतभेद थे पर नायक जी जो ठान लेते थे वो कर गुज़रते थे। उन्होंने अपने लोगों को बांस चीर कर के दिये और कहा जैसे ही शोभा यात्रा शुरु हो, उनके बीच घुस जाना और तब भी न रुकें तो मारना। आवाज़ होगी, चोट नहीं लगेगी। ज़ाहिर है, शोभा यात्रा नहीं निकल पायी।

जिद्दीपन उनमें था। नागपुर जेल में जब वे थे तो इस बात पर अनशन कर दिया कि खाने में प्याज नहीं पड़ेगी क्योंकि वे नहीं खाते थे। अंततः साथी मान गए। जेल में उन्हें मिली उपाधी की दो पंक्तियां इस प्रकार थीं, झुकी कमर पर ज़ोर दिये, डिक्टेटरशिप का बोझ लिये। लेकिन जेल से छूट कर वे वर्धा गए गांधी जी से बात करने के लिये कि राजनीतिक बंदियों के दूध मिलना चाहिए। गांधी जी की शाम की सैर के समय उन्हें महादेव देसाई ने एक सिरे से दूसरे सिरे तक चल कर बात करने की इजाज़त दी। गांधी जी ने उनसे कहा कि वे इस विषय पर लिखेंगे। शाम को सेवाग्राम में खाना खाने बैठे तो गांधी जी बगल में आ कर बैठ गए। दोने में जैसे ही दाल परसी गई, गांधी जी ने लहसुन का चूर्ण पुड़िया से निकाल कर अपनी और नायक जी की दाल में भुरक दिया। बड़ा जी कड़ा कर के उन्होंने दाल पी। सत्याग्रह आंदोलन के समय नायक जी के द्वारा चुने गए सत्याग्रही और उसे गिरफ़्तार कराने के तरीके को अमान्य करते हुए प्रदेश कांग्रेस ने उसे सत्याग्रही मानने से इन्कार कर दिया। यह मामला गांधी जी तक पहुँचा। गांधी जी ने फ़ैसला दिया कि वह शत प्रतिशत सत्याग्रही है, उस लड़के (नायक जी) ने बहुत सूझबूझ से काम लिया।

नायक जी का जीवन मोहभंग होने की यात्रा भी कही जा सकती है या नये प्रयोगों से जुड़ने का अनवरत सिलसिला। लेकिन जिस भी काम को हाथ में लिया उसे उन्होंने अपना लक्ष्य माना और प्राणप्रण से जुड़े रहे। उसकी निरर्थकता का अहसास होते ही छोड़ने में देर न की। उनकी जेल डायरी में ध्येय-वाक्य के रूप में लिखा मिलता है, "to live for an idea and die for a cause"। वे लकीर के फ़कीर कभी नहीं रहे। वे कहते थे हम ज़माने के पीछे नहीं चले, ज़माना हमारे पीछे चला। हालांकि जब जनता पार्टी अध्यक्ष चंद्रशेखर ने उनसे कहा कि आप जैसे लोग राजनीति से बाहर रहेंगे तो कैसे चलेगा। नायक जी ने जवाब दिया, अब या तो हम ज़माने के लायक नहीं रहे या ज़माना हमारे लायक नहीं रहा।

तकनीक का गुलाम लोकतंत्र!

डाटा विश्लेषण करने वाली एक कंपनी अमरीकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के चुनाव प्रचार के लिए फेसबुक पर से पांच करोड़ से अधिक अमरीकी मतदाताओं की निजी जानकारी चोरी की थी, और शुरुआती जानकारी से ही यह साफ जाहिर हो रहा है कि उसका इस्तेमाल ट्रंप के चुनाव अभियान के लिए किया गया था। अमरीका में करीब साढ़े 23 करोड़ वोटर हैं, और इस चोरी का मतलब उनमें से 20 फीसदी से अधिक लोगों को प्रभावित करने की कोशिश।

समाचार बताता है कि डाटा विश्लेषण करने वाली फर्म कैंब्रिज एनालिटिका ने अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के 2016 के चुनाव प्रचार में समर्थन तकनीक तैयार करने के लिए पांच करोड़ फेसबुक यूजरों की निजी जानकारी चुराई थी। समाचार प्रकाशित होने के बाद मैसाचुसेट्स की अटार्नी जनरल ने कहा कि उनके कार्यालय ने जांच शुरू कर दी है। फेसबुक ने शुक्रवार को कहा था कि डाटा प्राइवेसी नीति का उल्लंघन पाने के बाद उसने कैंब्रिज एनालिटिका को निलंबित कर दिया है। इसे फेसबुक के इतिहास में सबसे बड़ी डाटा चोरी कहा गया है।

जिन लोगों को यह लगता है कि टेक्नालॉजी में दुनिया में लोकतंत्र को बढ़ाने का काम किया है, और सबसे कमजोर तबके को भी आज इंटरनेट और कम्प्यूटर की वजह से कई किस्म के हक मिले हैं, उनकी बात टेक्नालॉजी के असर का एक पहलू भर है। इसका दूसरा पहलू यह है कि कम्प्यूटर और सोशल मीडिया, इन दोनों पर लोगों की जो निजी जानकारी दर्ज है, उसका बाजारू या जुर्म के लिए इस्तेमाल होने का खतरा भी खड़ा हो गया है।

ट्रंप के चुनाव के दौरान ही यह पुख्ता बात सामने आ गई थी कि उनकी विरोधी उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन की ईमेल चोरी करके रूस के हैकरों ने वहां की सरकार के रास्ते उन्हें शायद ट्रंप के लोगों तक पहुंचाया था, और हिलेरी को बदनाम करने में उनका इस्तेमाल हुआ था। इसके बाद से योरप के कई देशों ने रूस की ऐसी हरकत और किसी देश के चुनाव में विदेशी दखल के खिलाफ बड़ी नाराजगी जाहिर की थी।

बात महज विदेशी दखल की नहीं है, फेसबुक की जानकारी चोरी करके वोटरों को प्रभावित करने की रणनीति बनाकर ट्रंप के लोगों ने अमरीका के भीतर ही यह जुर्म किया है, और आज जो टेक्नालॉजी अमरीका में इस्तेमाल हो रही है, वह दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से में काम लाई जा सकती है।

कल के दिन भारत के चुनावों में लोगों के ईमेल बॉक्स की जानकारी उन्हें बदनाम करने में इस्तेमाल हो सकती है, लोगों के टेलीफोन कॉल डिटेल्स उजागर किए जा सकते हैं, और लोगों को ब्लैकमेल किया जा सकता है। आज सुप्रीम कोर्ट में आधार कार्ड की अनिवार्यता का जो विरोध चल रहा है, उसके पीछे एक तर्क यह भी है कि इससे सरकार के हाथ में लोगों की निजी जिंदगी की गोपनीयता आ जाएगी और कोई भी सरकार इसके बेजा इस्तेमाल का लुभावना मोह छोड़ नहीं पाएगी। भारत में सरकार जिस बड़े पैमाने पर आधार कार्ड की अनिवार्यता को लादने में लगी हुई है, और जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल थोड़ी सी रोक लगाई है, उसके बहुत खतरनाक नतीजे हो सकते हैं। हमने यह देखा है कि भारत में सुरक्षित माने जाने वाले बैंकों को किस तरह लूट लिया गया, और बैंकों के सारे निगरानी के इंतजाम, उनके कम्प्यूटर की जांच का इंतजाम सब धरा रह गया। आज आधार कार्ड की वजह से लोगों की आवाजाही, उनकी खरीददारी, उनका बैंक से लेन-देन, उनके फोन, उनके इंटरनेट, उनके ट्रेन और प्लेन के रिजर्वेशन, उनके टैक्स की जानकारी, यह सब कुछ सरकार के हाथ में हैऔर काफी अरसे से एक लतीफा चल रहा है जो कि लतीफा कम हकीकत अधिक है।

एक आदमी पीजा मंगाने के लिए फोन करता है, तो वहां से जवाब मिलता है कि आप हर बार जो पसंद करते हैं क्या वही भेजना है? हैरान आदमी पूछता है कि तुम्हें कैसे मालूम? तो जवाब मिलता है कि पिछले पन्द्रह बार आपने इस किस्म का पीजा मंगाया था। इस बार भी वही भेजने के लिए कहने पर सलाह मिलती है कि क्या आप अधिक सब्जियों वाला पीजा बेहतर नहीं समझेंगे? तो ग्राहक ने कहा कि नहीं मुझे सब्जियां नापसंद हैं। इस पर टेलीफोन पर ऑर्डर लेने वाले ने कहा कि आपका कोलेस्ट्रॉल बढ़ा हुआ है। हैरान आदमी ने पूछा कि तुम्हें कैसे मालूम? तो जवाब मिला- हमारे पास आपके पिछले सात बरस के सारे ब्लड टेस्ट की रिपोर्ट है क्योंकि आपने जिस कार्ड से भुगतान किया था, वह आधार से जुड़ा हुआ है। इस पर डरे-सहमे आदमी ने कहा लेकिन मैं तो बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल के लिए दवा ले रहा हूं। इस पर टेलीफोन पर जवाब मिला कि आपने चार महीनों में दवा नियमित रूप से नहीं ली है, और कुल 30 गोलियां ऑनलाईन खरीदी हैं। उसने कहा कि मैंने एक दवा दुकान से बाकी गोलियां खरीदी थीं। तो टेलीफोन पर कहा गया कि यह तो आपके क्रेडिट कार्ड पर दिख नहीं रहा है। उसने कहा कि मैंने नगद भुगतान किया था, तो फोन पर जवाब मिला कि आपका बैंक खाता इतनी नगदी निकालना दिखा नहीं रहा है। उसने कहा कि मेरे पास नगद पैसे आने का एक दूसरा जरिया है, तो फोन पर कहा गया कि आपके टैक्स रिकॉर्ड में तो ऐसी किसी नगद कमाई का जिक्र नहीं है...।

बातचीत का यह सिलसिला भयानक है कि एक आधार कार्ड के चलते लोगों की निजी जिंदगी नंगी हो चुकी है।

लेकिन अमरीका की ताजा खबर बताती है कि बिना आधार कार्ड के फेसबुक से निजी जानकारियां निकाली जा सकती हैं। इसी को लेकर कई बरस पहले अमरीका में एक नया लतीफा बना कि सरकार ने वहां सीआईए का बजट एक चौथाई कर दिया कि फेसबुक के बाद अब जासूसी पर अधिक मेहनत तो करनी नहीं पड़ती। फिलहाल लतीफों के बीच यह सोचें कि निजी जिंदगी की गोपनीयता तो रह नहीं गई है, इसलिए निजी जिंदगी को ही साफ-सुथरा रखना समझदारी होगी।

- सुनील कुमार